पाठ-4 आह्वान"(कवि : मैथलीशरण गुप्त)

शब्दार्थ

शब्दअर्थ-	शब्दअर्थ-
• व्यर्थ –बेकार, निरर्थक	• कर्मतैल- –कर्मरूपी तेल
• आगे बढ़ना –पहल करना, विकास करना	• विधि-दीप –भाग्य रूपी दीपक
• ऊँचे चढ़ना –अपनी क्षमता बढ़ाना, तरक्की करना	• दैव –विधाता, भाग्य
• भावना –इच्छा, कामना	• साँचा –मूर्तियाँ बनाने का खाँचा या फर्मा
• पुरुषार्थ –कर्म, पौरुष	• दोष मढ़ना –जिम्मेदार ठहराना
• पाठ पढ़ना –आचरण करना, सीखे हुए पर अमल करना	• देशबांधव- –देश के नागरिक,भाई-बहन
• ग्रास –निवाला, कौर	• साधक –साधना या परिश्रम करने वाले
• उद्यम –परिश्रम, मेहनत	• ऐक्य –एकता
• पीछे पड़े –पिछड़ गए	• विविध –अनेक प्रकार के